

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये चतुष्ष्टितमं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে চতুষ্টিতমং দশকম্ ॥

গোরিন্দাভিষেকর্ষণং, নন্দানযনর্ষণং চ

আলোক্য শৈলোদ্ধরণাদিরূপং
প্রভারমুচ্চৈস্তর গোপলোকাঃ।
রিশ্বেশ্বরং ঐরামভিমত্য রিশ্বের
নন্দং ভরজ্জাতকমন্ত্রপৃচ্ছন্ ॥ 64.1 ॥

গর্গোদিতো নির্গদিতো নিজায
রর্গায তাতেন তর প্রভারঃ।
পূর্বাধিকস্ত্বয়নুরাগ এষা -
মৈধিষ্ট তারং বহুমানভারঃ ॥ 64.2 ॥

ততোহরমানোদিততত্ত্ববোধঃ
সুরাধিরাজঃ সহ দির্যগর্যা।
উপেত্য তুষ্টার স নষ্টগর্গঃ
স্পৃষ্টরা পদাজ্জং মণিমৌলিনা তে ॥ 64.3 ॥

স্নেহস্তুতৈস্ত্বাং সুরভিঃ পযোভি -
গোরিন্দনামাক্ষিতমভ্যষিঞ্চৎ।
ঐরারতোপাহতদির্যগঙ্গা -
পাথোভিরিন্দ্রোহপি চ জাতহর্ষঃ ॥ 64.4 ॥

জগত্ৰযেশে ঐরযি গোকুলেশে
তথাহভিষিক্তে সতি গোপরাটঃ।

नाकेहपि रैकुष्ठपदेहप्यलभ्यां
श्रियं प्रपेदे भरतः प्रभारां ॥ 64.5 ॥

कदाचिदन्तर्यमुनं प्रभाते
स्नायन् पिता रारुणपुरुषेण।
नीतस्तमानेतुमगाः पुरीं व्रं
तां रारुणीं कारणमर्त्यरूपः ॥ 64.6 ॥

ससद्भ्रमं तेन जलाधिपेन
प्रपूजितस्त्रुं प्रतिगृह्य तातम्।
उपागतस्तुक्कणमात्रगेहं
पिताहरदत्तचरितं निजेभ्यः ॥ 64.7 ॥

हरिं रिनिश्चित्य भरन्तमेतान्
भरंपदालोकनवद्गतृषान्।
निरीक्ष्य रिषेण परमं पदं तद् -
दुरापमन्यैस्त्रुमदीदृशस्तान् ॥ 64.8 ॥

स्फुरंपरानन्दरसप्रराह -
प्रपूर्णाकैरल्यमहापयोधौ।
चिरं निमग्नाः खलु गोपसञ्ज्ञा -
स्त्रुयैर भूमन् पुनरुद्भुतास्ते ॥ 64.9 ॥

करवदररदेरं देर कुत्रारतारे
निजपदमनराप्यं दर्शितं भक्तिभाजाम्।
तदिह पशुपकूपी व्रं हि साम्नां परात्रा
परनपुरनिरासिन् पाहि मामामयेभ्यः ॥ 64.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये चतुष्ष्टितमं दशकं समाप्तम् ॥